Class — T.D.C Part II

Paper — IV

पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(History of Western Philosophy)

Topic — लाइबनित्ज- पूर्व स्थापित सामंजस्य
(Leibnitz — Pre-Established Harmony)

Dr. Poonam Sharma
Assistant Professor
Dept. of Philosophy
R.N. College,
Hajipur

लाइबनित्ज — पूर्व-स्थापित सामंजस्य
(Leibnitz — Pre-Established Harmony)

जर्मन दार्शनिक लाइबनित्ज बुद्धिवादी विचारधारा के समर्थक हैं। इनके अनुसार ज्ञान का मूल स्रोत बुद्धि है, अनुभव नहीं। बहुतत्ववाद का समर्थन करते हुए वे मूल तत्त्व या द्रव्य को अनेक मानते हैं। ये अनेक तत्त्व क्रियात्मक शक्ति का केन्द्र है। इन स्वतन्त्र तत्त्वों की क्रिया- शक्ति पदार्थ एवं गति में रूपान्तरित होती है। लाइबनित्ज इन स्वतन्त्र एवं मौलिक तत्त्वों को मोनेड (Monad) कहते हैं।

लाइबनित्ज ने Monads या चिदणुओं की अनेक विशेषताएँ बतलायी हैं। ये असंख्य सूक्ष्म, शक्ति के बिन्दु के समान एवं चेतन-स्वरूप होते हैं। चिदणुओं का विभाजन नहीं होता, इसलिए ये सरल तथा नित्य हैं। इनकी न कोई आकृति होती है और न ही ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा इनका प्रत्यक्ष होता है। ये चिदणु एक-दूसरे से पूर्णतः स्वतन्त्र होते हैं अर्थात् उनका अपना विशिष्ट अस्तित्व होता है। ये चिदणु द्रष्टा के अस्तित्व से पृथक् होते हैं। इन अनेक चिदणुओं के कारण ही विश्व में विविधता है तथा विश्व के पदार्थ शक्ति केन्द्रों से युक्त हैं।

लाइबनित्ज ने चिदणुओं में ईश्वर द्वारा प्रदत्त प्रकृति के अतिरिक्त दो प्रकार की शक्तियों का भी उल्लेख किया है। प्रत्येक चिदणु में ईक्षण (Perception) एवं प्रयासन (Appetition) — ये दो शक्तियाँ होती हैं। ईक्षण शक्ति के कारण प्रत्येक चिदणु अन्य सभी की दशाओं को स्वयं में प्रतिबिम्बित करता है। उसकी दूसरी शक्ति प्रयासन है, जिसके कारण प्रत्येक चिदणु की दशा क्रमिक रूप में विकासरत है। चेतना के स्तर के आधार पर लाइबनित्ज चिदणुओं के अनेक प्रकार बतलाते हैं। चिदणुओं के ये स्तर हैं — (i) अचेतन (ii) उपचेतन (iii) सचेतन (iv) आत्मचेतन तथा (v) चिदणुओं का चिदणु। इनमें प्रथम स्तर अचेतन चिदणुओं में चेतना

सुप्त अवस्था में रहती है। ये जड़-स्वरूप हैं तथा अन्तिम स्तर पर चेतना अर्धावस्था में रहती है। यह ईश्वरीय स्वरूप है।

लाइबनित्ज ने इन चिदणुओं के सम्बन्ध की व्याख्या एक विशिष्ट सिद्धान्त के आधार पर की है। यह सिद्धान्त 'पूर्व स्थापित सामंजस्य' (Pre-Established Harmony) कहलाता है। पूर्व स्थापित का अर्थ है कि इन चिदणुओं के बीच पहले से ही यह सम्बन्ध बना हुआ है। प्रत्येक चिदणु स्वतन्त्र, पूर्ण एवं गवाक्षहीन है। इनके भीतर से बाहर या बाहर से भीतर किसी प्रकार का प्रकाश नहीं जाता। चेतना के स्तर पर इन चिदणुओं में विविधता है तथा संख्यात्मक रूप से ये अनेक हैं, फिर भी इनके बीच पारस्परिक सम्बन्ध बना रहता है। यह व्यवस्था ईश्वर ने इनके निर्माण के समय ही कर दी है कि उनके बीच पारस्परिक सामंजस्य बना रहे। यद्यपि ये अनेक चिदणु एक-दूसरे से स्वतन्त्र एवं पृथक् हैं, फिर भी पूर्व-स्थापित सामंजस्य के कारण एक के अनुरूप दूसरे में परिवर्तन हो जाता है।

इस सामंजस्य एवं सम्बन्ध को और अधिक स्पष्ट करने के लिए लाइबनित्ज ने अनेक उपमाएँ दी हैं। उनका कहना है कि एकतान संगीत या आर्केस्ट्रा में जिसप्रकार प्रत्येक वादक एक-दूसरे से स्वतन्त्र होकर अपने वाद्य-यन्त्रों को बजाते हैं, फिर भी उससे निकलने वाली सामूहिक ध्वनि समान स्वर में मनमोहक होती है। वे वादक न तो एक-दूसरे को देखते हैं और न ही एक-दूसरे को सुनते हैं, किन्तु उनकी ध्वनियाँ सम-स्वर उत्पन्न करती है।

मन एवं शरीर के सम्बन्ध की व्याख्या भी लाइबनित्ज ने पूर्व-स्थापित सामंजस्य के आधार पर की है। उनका कहना है कि शरीर एवं आत्मा के बीच किसीप्रकार का तात्विक भेद नहीं होता, केवल उनके बीच चेतना के स्तर का अन्तर होता है। शरीर के चिदणुओं में चेतना सुषुप्तावस्था में होती है तथा आत्मा के चिदणु अधिक चैतन्ययुक्त होते हैं। इसलिए इन दोनों की क्रियाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि वे

एक-दूसरे को प्रभावित कर रहे हैं, किन्तु ऐसा एकतानता के सूत्र में बँधे रहने के कारण होता है। आत्मा एवं शरीर में किसीप्रकार की क्रिया-प्रतिक्रिया नहीं होती। इन दोनों के सम्बन्ध को स्पष्ट करने के लिए लाइबनिल घड़ीसाज (घड़ी बनाने वाला) एवं दो घड़ियों का उदाहरण देते हैं। जिसप्रकार एक कुशल घड़ीसाज दो घड़ियों का निर्माण इसप्रकार करता है कि दोनों एक-दूसरे से अप्रभावित होते हुए भी समान समय की सूचना देते हैं। इसीप्रकार ईश्वर ने घड़ीसाज की भाँति मन एवं शरीर की रचना ऐसी की है कि ये दो घड़ियों के समान पृथक् एवं स्वतन्त्र होकर भी एक-जैसी क्रिया करते हैं।

समीक्षा — लाइबनिल के दार्शनिक विचारों का प्रभाव अनेक विचारों पर पड़ा। फिर भी उनके मौलिक विचारों में अनेक दोष हैं।

(i) लाइबनिल एक ओर चिदणु को अनादि एवं अनन्त कहते हैं, तो दूसरी ओर उसे ईश्वर के द्वारा निर्मित बतलाते हैं। यह दोषपूर्ण है।

(ii) उनके अनुसार अनेक चिदणुओं में स्वतन्त्रता एवं पूर्णता है। पुनः वे चिदणुओं को पूर्व-स्थापित सामंजस्य में बँधा हुआ भी स्वीकार करते हैं। यह विचार विरोधाभासयुक्त है।

इसप्रकार उनके विचारों में अनेक असंगतियों के रहने पर भी इसका महत्व है। उन्होंने विज्ञानवाद को एक नयी दिशा दी तथा बाद के वैज्ञानिक विचारधारा को भी प्रभावित किया।

———X———X———